

छठवीं ढाल  
मुक्तिमार्ग का तीसरा चरण

सम्यक्चारित्र और उसका फल

Presentation Created By-  
श्रीमती सारिका विकास छाबड़ा

# छठवीं ढाल की विषय वस्तु

| छन्द    | विषय वस्तु                              |
|---------|---|
| 1 – 6   | मुनिराज के २८ मूलगुण और ३ गुप्तियाँ     |
| 6       | मुनिराज का समता भाव                     |
| 7       | मुनिदशा में १२ तप, १० धर्म आदि का वर्णन |
| 8 – 11  | मुनिराज के शुद्धोपयोग का वर्णन और फल    |
| 12 – 13 | सिद्धदशा का वर्णन                       |
| 14      | रत्नत्रय की आराधना का उपदेश             |
| 15      | ग्रन्थकार की अन्तिम शिक्षा              |

# सम्यक्चारित्र

निश्चय सम्यक्चारित्र

आत्मलीनता

व्यवहार सम्यक्चारित्र

व्रत, समिति,  
गुप्ति

# अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य महाव्रत के लक्षण

षट्काय जीव न हननतै, सब विध दरवहिंसा टरी ।  
रागादि भाव निवारतै, हिंसा न भावित अवतरी ॥  
जिनके न लेश मृषा न जल, मृण हू बिना दीयो गहैं ।  
अठदश सहस विध शील धर, चिद्ब्रह्म में नित रमि रहैं ॥1 ॥

- ✿ षट्काय जीव- छह काय के जीवों को
- ✿ न हननतै- घात न करने के भाव से
- ✿ निवारतै- दूर करने से
- ✿ न अवतरी- नहीं होती,
- ✿ लेश- किंचित्
- ✿ मृषा- झूठ
- ✿ मृण- मिट्टी
- ✿ हू- भी
- ✿ न गहैं- ग्रहण नहीं करते
- ✿ अठदश सहस- अठारह हजार
- ✿ विध- प्रकार के
- ✿ चिद्ब्रह्म में- चैतन्यस्वरूप आत्मा में
- ✿ रमि रहैं-लीन रहते हैं ।

षट्काय जीव न हननतै, सब विध दरवहिंसा टरी ।  
रागादि भाव निवारतै, हिंसा न भावित अवतरी ॥  
जिनके न लेश मृषा न जल, मृण हू बिना दीयो गहैं ।  
अठदश सहस विध शील धर, चिद्ब्रह्म में नित रमि रहैं ॥1 ॥

❖ द्रव्य हिंसा नहीं -

❖ छह काय के जीवों को घात न करने के भाव से सर्व प्रकार की द्रव्य हिंसा दूर हो गई है

❖ भावहिंसा नहीं -

❖ राग द्वेष, काम, क्रोध, मान, माया, लोभ आदि भावों को दूर करने से भावहिंसा भी नहीं रहती ।

❖ झूठ नहीं -

❖ उन मुनियो को किञ्चित् झूठ नहीं होता;

❖ जल और तिनका भी दिये बिना ग्रहण नहीं करते तथा

❖ 18000 प्रकार के शील को धारण कर के

❖ चैतन्य स्वरूप में नित्यलीन रहते हैं।

निश्चयसम्यग्दर्शन-  
ज्ञानपूर्वक स्वरूप में  
निरन्तर  
एकाग्रतापूर्वक रमण  
करना ही मुनिपना है

५ इन्द्रिय  
विजय

५ समिति

६ आवश्यक

५ महाव्रत

साधु के  
२८ मूल  
गुण

७ अन्य



५

महाव्रत

समिति

इन्द्रिय विजय

६

आवश्यक

७

अन्य गुण

# महाव्रत

अहिंसा महाव्रत

सत्य महाव्रत

पाँच पापों का पूर्ण  
रूप से मन, वचन  
काया से और कृत,  
कारित, अनुमोदना से  
त्याग करना महाव्रत  
कहलाता है ।

अचौर्य महाव्रत

ब्रह्मचर्य महाव्रत

परिग्रह त्याग महाव्रत/  
अपरिग्रह महाव्रत

## अहिंसा महाव्रत

- सर्व प्रकार से द्रव्य हिंसा और भाव हिंसा का त्याग अहिंसा महाव्रत कहलाता है

## सत्य महाव्रत

- स्थूल या सूक्ष्म ऐसे दोनों प्रकार के झूठ वे नहीं बोलते

## अचौर्य महाव्रत

- सूक्ष्म और स्थूल किसी भी प्रकार की चोरी नहीं करना अचौर्यमहाव्रत है

# अहिंसा महाव्रत

## द्रव्य अहिंसा

- ६ काय [पृथ्वीकाय आदि पाँच स्थावर काय तथा एक त्रसकाय] के जीवों का घात न करना

## भाव अहिंसा

- राग, द्वेष, काम, क्रोध, मान इत्यादि भावों की उत्पत्ति न होना

# हिंसा

अविरमण रूप

पर-जीव की हिंसा का त्याग भी नहीं

पर-जीव की हिंसा भी नहीं

परिणमन रूप

पर-जीव का घात करना

# विशेष

मुनिराज अविरमण रूप, परिणमन रूप दोनों प्रकार की हिंसा के त्यागी होते हैं ।

मुनिराज सावधानीपूर्वक चलते हैं तो जीव घात होने पर भी हिंसा नहीं ।

श्रावक असावधानीपूर्वक कार्य करता है उस समय जीव घात न होने पर भी हिंसा है ।

# सत्य महाव्रत

अप्रशस्त वचन =

= अ + प्रशस्त + वचन

= नहीं + अच्छे + वचन

स्थूल असत्य,  
सूक्ष्म असत्य

ऐसा सत्य जिससे  
स्वयं या दूसरे पर  
आपत्ति आदि आ जावे

# कैसा सत्य भी नहीं बोलना चाहिये

जिससे अन्य प्राणी का घात हो जाये

धर्म बिगड़ जाये

अपवाद निन्दा हो जाये

कलह, संक्लेश, भय आदि प्रकट हो जाये



मुनिराज कैसे वचन नहीं बोलते है?

किसी भी परिस्थिति में असत्य नहीं बोलते

वे मौन ले लेते हैं

उनके सत्य वचन अच्छे न लगने पर भी असत्य नहीं  
क्योंकि हितकारी होते हैं

# ब्रह्मचर्य महाव्रत

- शील के अठारह हजार भेदों का सदा पालन करते हुये स्त्री मात्र का त्याग करना और चैतन्यरूप आत्मस्वरूप में लीन रहना ब्रह्मचर्यमहाव्रत है

# परिग्रह त्याग महाव्रत

- चौदह प्रकार के अन्तरंग और दश प्रकार के बहिरंग परिग्रहों का त्याग करना ।

# अब्रह्म

## बहिरंग

रतिजन्य सुख के लिये स्त्री  
पुरुष की जो भी चेष्टायें हैं

## अंतरंग

आत्मा में लीनता का  
अभाव

# 6 प्रकार की स्त्रियाँ

चेतन-3

मनुष्यनी

तिर्यंचनी

देवांगना

अचेतन-  
3

काष्ठ

धातु

चित्र

# ब्रह्मचर्य व्रत की भावनार्यें

|                                     |                               |   |                                    |                             |                     |
|-------------------------------------|-------------------------------|---|------------------------------------|-----------------------------|---------------------|
| स्त्री राग<br>कथा<br>श्रवण<br>त्याग | मनोहर अग<br>निरीक्षण<br>त्याग | पूर्व भोगे<br>हुए<br>विषयों<br>का<br>स्मरण<br>त्याग | गरिष्ठ<br>रसों का<br>सेवन<br>त्याग | शरीर का<br>संस्कार<br>त्याग |                     |
| सम्ब-<br>न्धित<br>इन्द्रिय          | कर्ण                          | चक्षु   | मन                                 | रसना                        | स्पर्शन और<br>घ्राण |

परिग्रह त्याग महाव्रत, ईर्या  
समिति और भाषा समिति

अंतर चतुर्दस भेद बाहिर, संग दसधा तैं टलैं ।  
परमाद तजि चौकर मही लखि, समिति ईर्या तैं चलैं ॥  
जग-सुहितकर सब अहितहर, श्रुति सुखद सब संशय हरैं ।  
भ्रमरोग-हर जिनके वचन मुखचन्द्र तैं अमृत झरैं ॥2 ॥

- ❁दसधा= दस प्रकार के
- ❁संग= परिग्रह से
- ❁टलैं= रहित होते
- ❁तजि= छोड़कर
- ❁चौकर= चार हाथ
- ❁मही= जमीन
- ❁लखि= देखकर
- ❁जग सुहितकर= जगत का सच्चा हित करनेवाला
- ❁श्रुति सुखद= सुनने में प्रिय लगे
- ❁भ्रम रोगहर= मिथ्यात्वरूपी रोग को हरनेवाला
- ❁वचन अमृत= वचनरूपी अमृत
- ❁झरैं= झरता है ।

अंतर चतुर्दश भेद बाहिर, संग दसधा तैं टलैं ।  
परमाद तजि चौकर मही लखि, समिति ईर्या तैं चलैं ॥  
जग-सुहितकर सब अहितहर, श्रुति सुखद सब संशय हरैं ।  
भ्रमरोग-हर जिनके वचन मुखचन्द्र तैं अमृत झरैं ॥2 ॥

✿ परिग्रहत्याग महाव्रत –

✿ वीतरागी मुनि चौदह प्रकार के अन्तरंग और दश प्रकार के बहिरंग परिग्रहों से रहित होते हैं

✿ ईर्या समिति –

✿ दिन में सावधानीपूर्वक चार हाथ आगे की भूमि देखकर चलने का विकल्प उठे

✿ भाषा समिति –

✿ जिसप्रकार चन्द्रमा से शीतलतारूप अमृत झरता है, उसीप्रकार मुनि के मुखचन्द्र से जगत का हित करनेवाले,

✿ सर्व अहित का नाश करनेवाले,

✿ सुनने में सुखकर,

✿ सर्व प्रकार की शंकाओं को दूर करनेवाले और

✿ मिथ्यात्व विपरीतता या सन्देह = रूपी रोग का नाश करनेवाले

✿ ऐसे अमृतवचन निकलते हैं ।



# 5 સમિતિ

ઈર્યા સમિતિ

ભાષા સમિતિ

ઁષણા સમિતિ

આદાન નિક્ષેપણ  
સમિતિ

પ્રતિષ્ઠાપન  
સમિતિ

# सच्ची समिति किसे कहते हैं?

रक्षा के हेतु ही समिति नहीं है; मुनि को किंचित् राग होने पर गमनादि क्रियाएँ होती हैं

वहाँ उन क्रियाओं में अति आसक्ति के अभाव से प्रमादरूप प्रवृत्ति नहीं होती तथा

दूसरे जीवों को दुःखी करके अपना गमनादि प्रयोजन सिद्ध नहीं करते,

इसलिये उनसे स्वयं दया का पालन होता है ।

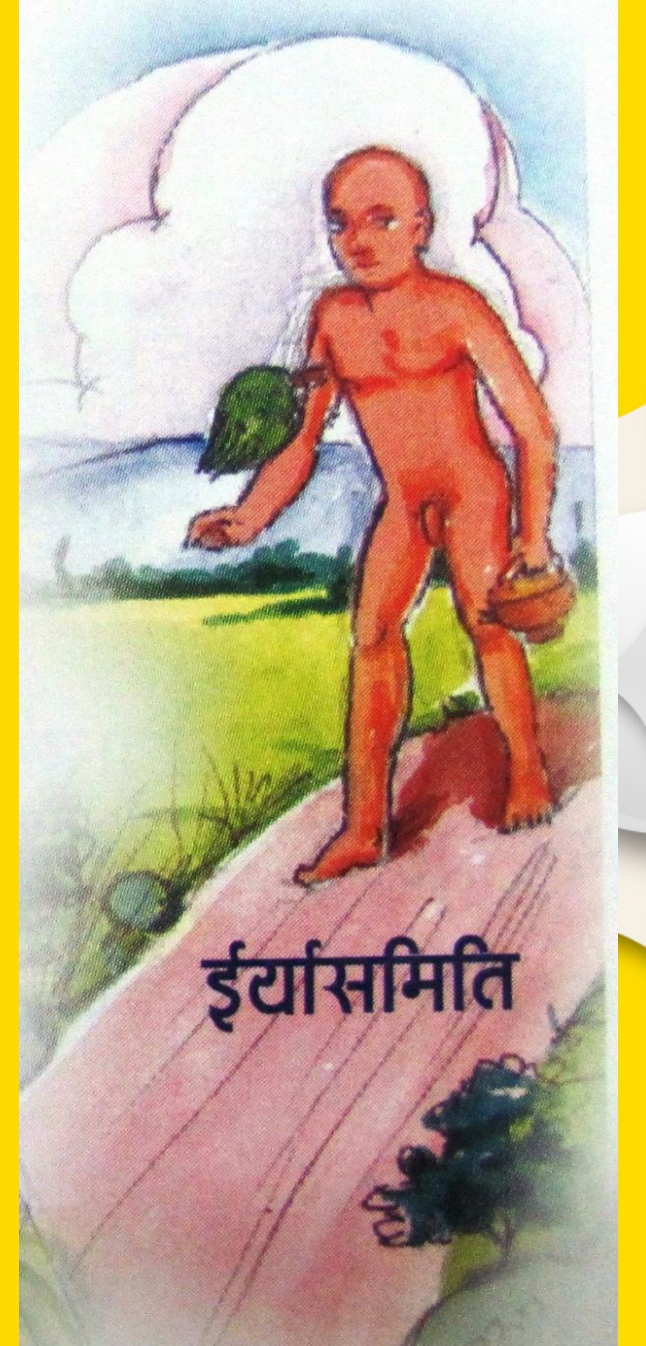
# ईर्या समिति

प्रमाद को छोड़कर  
प्रयोजनवश

दिन में ४ हाथ आगे जमीन  
देखकर प्रासुक भूमि पर चलना

ईर्या समिति है

[www.JainKosh.org](http://www.JainKosh.org)



# ईर्या समिति का पालन करते समय ध्यान रखने योग्य बातें

## मार्ग शुद्धि

हरितकाय, त्रस  
काय से रहित

धूप, सवारी आदि  
से तपा हुआ

## उद्योत शुद्धि

सूर्य प्रकाश में  
चलना

अंधेरे, कृत्रिम  
लाइट में नहीं  
चलना

## उपयोग शुद्धि

उपयोग केन्द्रित  
करके चलना

पैरों को सावधानी  
से उठाकर चलना

## आलंबन शुद्धि

बिना प्रयोजन  
विहार नहीं करना

गुरु वंदना, तीर्थ  
वंदना आदि के  
निमित्त से चलना

# भाषा समिति

आगम के अनुसार

हित-मित-प्रिय वचन बोलना

भाषा समिति है

मुनिराज  
की वाणी  
कैसी होती  
है

जग का हित करने वाली

अहित नाशक

संशय को दूर करने वाली

कर्णप्रिय

भ्रमरूपी रोगों को हरने वाली

चंद्रमा की चाँदनी के समान अमृतमयी

# एषणा, आदान-निक्षेपण और प्रतिष्ठापन समिति

छ्यालीस दोष बिना सुकुल, श्रावकतनैँ घर अशन को ।  
लैँ तप बढ़ावन हेतु, नहिँ तन पोषते तजि रसन को ॥  
शुचि ज्ञान संयम उपकरण, लखिकैँ गहैँ लखिकैँ धरैँ ।  
निर्जन्तु थान विलोकि तन मल मूत्र श्लेष्म परिहरैँ ॥3 ॥

✿सुकुल=उत्तम कुलवाले

✿श्रावकतनैँ= श्रावक के घर और

✿रसन को= रसों को

✿तजि= छोड़कर

✿अशन को= भोजन को

✿लैँ= ग्रहण करते हैं

✿शुचि= पवित्रता के

✿उपकरण =साधन कमण्डल को

✿लखिकैँ= देखकर

✿गहैँ= ग्रहण करते हैं

✿धरैँ= रखते हैं

✿मल=विष्टा

✿मूत्र=पेशाब

✿श्लेष्म= थूक को

✿निर्जन्तु थान= जीव रहित  
स्थान

✿विलोकि= देखकर

✿परिहरैँ= त्यागते हैं



छियालीस दोष बिना सुकुल, श्रावकतनैँ घर अशन को ।  
लैँ तप बढ़ावन हेतु, नहिँ तन पोषते तजि रसन को ॥  
शुचि ज्ञान संयम उपकरण, लखिकैँ गहैँ लखिकैँ धरैँ ।  
निर्जन्तु थान विलोकि तन मल मूत्र श्लेष्म परिहरैँ ॥3 ॥

### ❖ एषणा समिति

❖ वीतरागी जैन मुनि-साधु उत्तम कुलवाले श्रावक के घर, आहार के छियालीस दोषों को टालकर तथा अमुक रसों का त्याग करके, शरीर को पुष्ट करने का अभिप्राय न रखकर, मात्र तप की वृद्धि करने के लिए आहार ग्रहण करते हैं

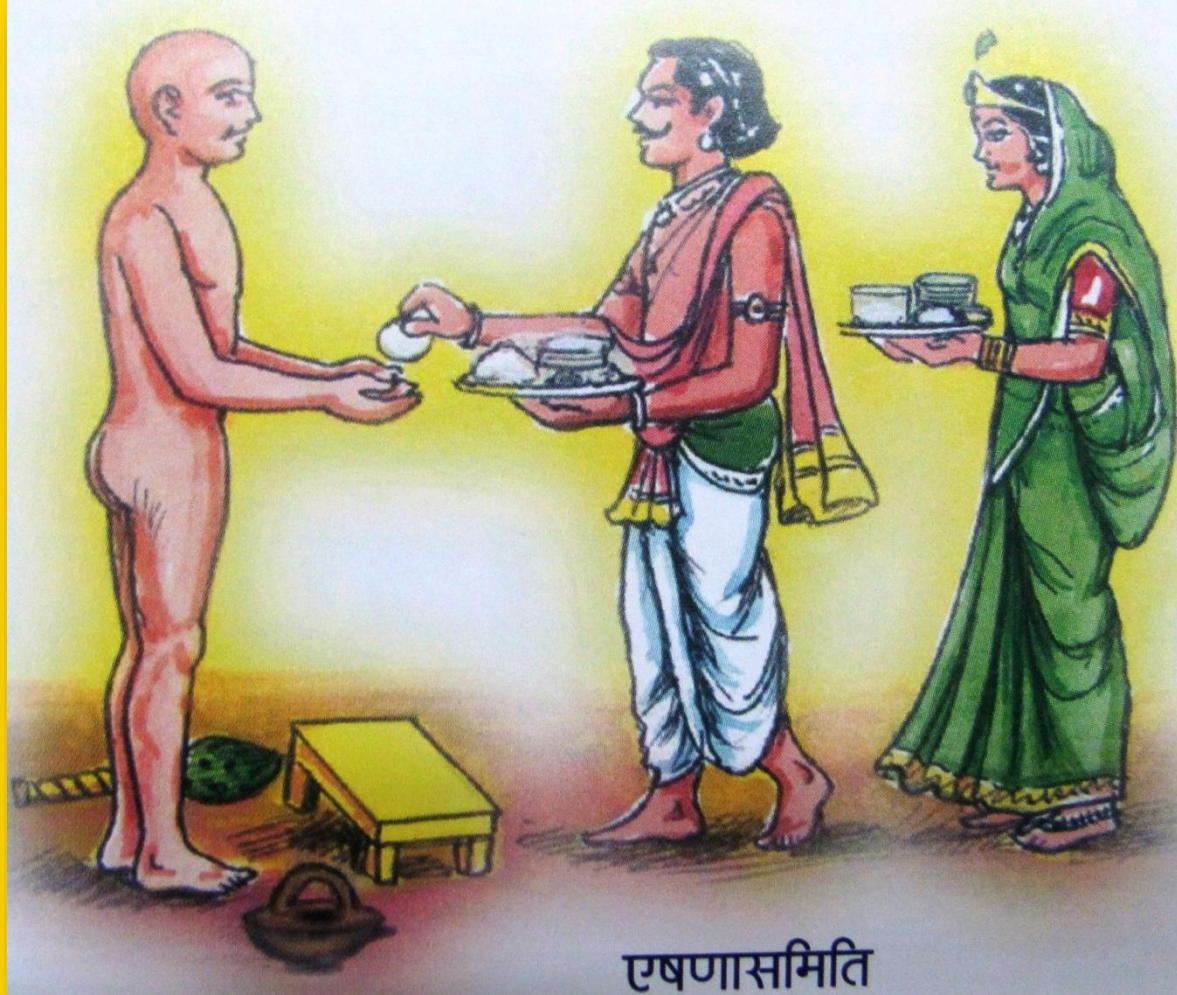
### ❖ आदान-निक्षेपण समिति

❖ पवित्रता के साधन कमण्डल को, ज्ञान के साधन शास्त्र को और संयम के साधन पीछी को जीवों की विराधना बचाने हेतु देखभाल कर रखते हैं तथा उठाते हैं

### ❖ व्युत्सर्ग अर्थात् प्रतिष्ठापन समिति

❖ मल-मूत्र-कफ आदि शरीर के मैल को जीवरहित स्थान देखकर त्यागते हैं

# एषणा समिति



एषणासमिति

[www.JainKosh.org](http://www.JainKosh.org)

वीतरागी जैन मुनि-साधु

उत्तम कुलवाले श्रावक के  
घर,

आहार के 46 दोषों को  
टालकर

तथा अमुक रसों का त्याग  
करके,

शरीर को पुष्ट करने का  
अभिप्राय न रखकर,

मात्र तप की वृद्धि करने के  
लिए आहार ग्रहण करते हैं

# एषणा समिति के 46 दोष

उद्गम दोष

१६

दाता की ओर  
से लगने वाले

उत्पादन दोष

१६

पात्र की ओर  
से लगने वाले

अशन दोष

१०

भोजन सामग्री  
से संबंधित

अंगारक दोष

४

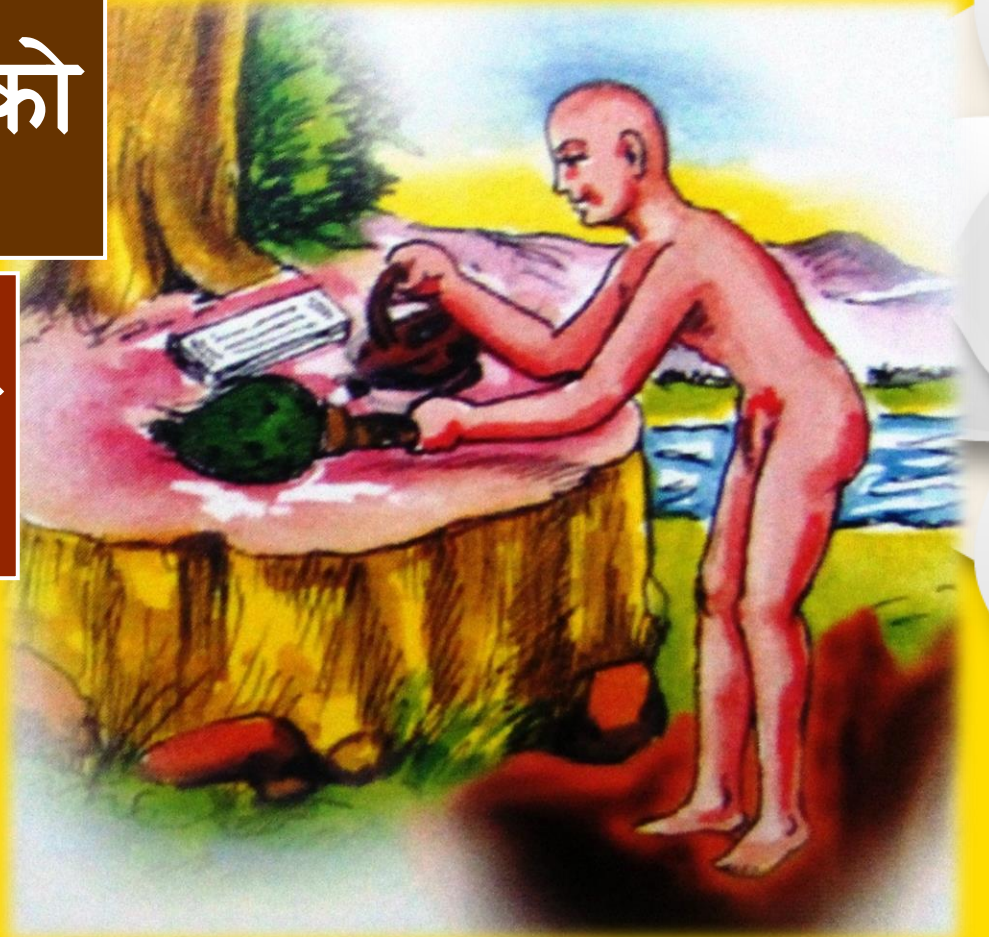
आसक्ति से  
भोजन करना

# आदान-निक्षेपण समिति

शुद्धि, ज्ञान और संयम के उपकरण को

देखकर उठाना तथा देखकर रखना

आदान-निक्षेपण समिति है ।



मुनिचर्या के बाह्य साधनों को उपकरण कहते हैं।

शुद्धि का उपकरण

कमण्डल

ज्ञान का उपकरण

शास्त्र

संयम का उपकरण

मयूर  
पिच्छिका

# आदान निक्षेपण समिति के दोष

सहसा दोष

- शरीरादि की शीघ्रता से सावधानता के बिना उठाना, पटकना, पसारना, संकोचना

अनोभोग दोष

- उपयोगपूर्वक नेत्रों से बिना देखे उठाना, रखना

दुष्प्रभृष्ट दोष

- अनादरपूर्वक बिना मन लगाये सिर्फ लोगों को अपनी शुद्धता दिखाने के लिये प्रमार्जन करना

अप्रत्यवेक्षित दोष

- बहुत काल बीतने पर जब जीवों का निवास हो जावे तब वस्तु शोधना

# प्रतिष्ठापन समिति

जीव-जन्तु रहित स्थान को देखकर

शरीर के मल, मूत्र, कफ आदि को छोड़ना

प्रतिष्ठापन समिति है ।



# प्रतिष्ठापन समिति

जन संचार रहित स्थान में

हरितकायिक व त्रसादि जीव जन्तु रहित अचित्त स्थान में

दूर तथा छिपे हुये

बिल व छेदों से रहित

जहाँ लोक निन्दा न करे

वा कोई विरोध न करे

ऐसे स्थान पर मल मूत्र का क्षेपण करना

प्रतिष्ठापना समिति है ।



# मुनियों की तीन गुप्ति और पाँच इन्द्रियों पर विजय

सम्यक् प्रकार निरोध मन वच काय, आतम ध्यावते;  
तिन सुथिर मुद्रा देखि मृगगण उपल खाज खुजावते ।  
रस रूप गंध तथा फरस अरु शब्द शुभ असुहावने;  
तिनमें न राग विरोध पंचेन्द्रिय-जयन पद पावने ॥४॥

- ✿ सम्यक् प्रकार= भलीभाँति
- ✿ ध्यावते= ध्यान करते हैं
- ✿ तिन= उन मुनियों की
- ✿ सुथिर= सुस्थिर-शांत
- ✿ उपल= पत्थर समझकर
- ✿ मृगगण= हिरन अथवा चौपाये प्राणियों के समूह
- ✿ खाज= खुजली को
- ✿ शुभ= प्रिय
- ✿ असुहावने= अप्रिय
- ✿ फरस= आठ प्रकार के स्पर्श
- ✿ अरु= और
- ✿ राग-विरोध= राग या द्वेष
- ✿ पंचेन्द्रिय जयन= पाँच इन्द्रियों को जीतनेवाला
- ✿ पावने= प्राप्त करते हैं ।

सम्यक् प्रकार निरोध मन वच काय, आत्म ध्यावते;  
तिन सुथिर मुद्रा देखि मृगगण उपल खाज खुजावते ।  
रस रूप गंध तथा फरस अरु शब्द शुभ असुहावने;  
तिनमें न राग विरोध पंचेन्द्रिय-जयन पद पावने ॥4॥

गुप्ति कैसे?

मन-वचन-काया का भलीभाँति निरोध करके, जब अपने आत्मा का ध्यान करते हैं, तब उन मुनियों की सुस्थिर शांत अवस्था को देखकर, उन्हें पत्थर समझकर हिरणादि अपनी खुजली को खुजाते हैं ।

इन्द्रिय  
विजय  
कैसे?

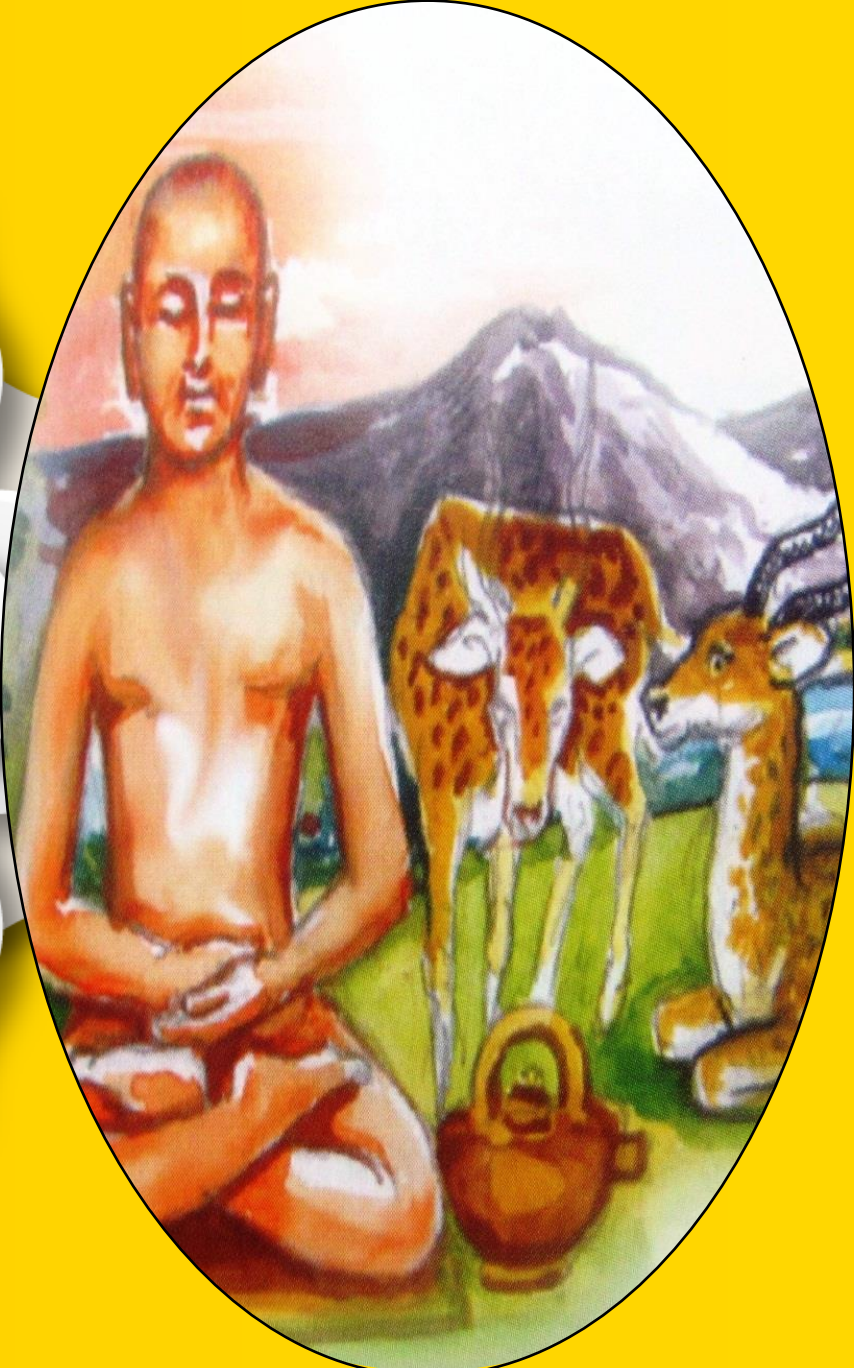
प्रिय और अप्रिय रस, गंध, वर्ण, स्पर्श और शब्द उन सबमें राग या द्वेष मुनि को नहीं होते इसीलिये वे पंचेन्द्रियों को जीतने वाला जितेन्द्रिय पद प्राप्त करते हैं ।

# गुप्ति किसे कहते हैं?

जिसके बल से संसार के कारणों से आत्मा का गोपन अर्थात् रक्षा होती है वह गुप्ति है।

# गुप्ति किसे कहते हैं?

(मन वचन काय इन तीनों) योगों  
का सम्यक् प्रकार निग्रह करना  
गुप्ति है।



# गुप्ति

- मनोगुप्ति
- वचनगुप्ति
- कायगुप्ति

# इन्द्रिय विजय

अनुकूल और  
प्रतिकूल इन्द्रिय  
विषयों में राग-  
द्वेष नहीं करना

स्पर्शन  
इन्द्रियविजय

रसना  
इन्द्रियविजय

घ्राण  
इन्द्रियविजय

चक्षु  
इन्द्रियविजय

कर्ण  
इन्द्रियविजय

# स्पर्शन इन्द्रियविजय

हलका, भारी, ठण्डा, गर्म, रूखा, चिकना, कठोर, नर्म इन जीव और अजीव से सम्बन्ध रखनेवाले

आठ प्रकार के स्पर्शों में इष्ट हो तो राग न करना और

अनिष्ट हो तो द्वेष नहीं करना

स्पर्शन इन्द्रिय-विजय है।



# रसना इन्द्रियविजय

चार प्रकार के आहार में इष्ट अनिष्ट भाव नहीं रखना,

गृह्यता नहीं करना,

रस सहित वा नीरस में समान बुद्धि रखना,

कदाचित् रस सहित पदार्थों में स्वाद की अपेक्षा नहीं करके

भूख की वेदना उपशमन करने के लिये आहार लेना,

उसमें किसी प्रकार का राग-द्वेष नहीं करना रसना इन्द्रिय-विजय है।

# घ्राण इन्द्रियविजय

चन्दन कर्पूरादि अचित्त द्रव्यों की  
मनोज्ञ गन्ध में राग नहीं करना,

तथा विषा मूत्रादि दुर्गन्धमय पदार्थों से  
घृणा या द्वेष नहीं करना,

किन्तु वस्तु स्वरूप विचारकर समभाव  
रखना, यही घ्राणेन्द्रिय विजय है

सचित्त तथा अचित्त पदार्थों की क्रिया,

संस्थान (आकार) या

वर्ण भेदों में

राग-द्वेष न करना चक्षुनिरोध नामा मूलगुण है।

चक्षु  
इन्द्रियविजय

सचेतन एवं अचेतन पदार्थों से उत्पन्न कर्णप्रिय मनोहर शब्दों को सुनकर उनमें आसक्त न होना

कर्ण  
इन्द्रियविजय

और कर्ण कटु असुहावने शब्दों को सुनकर उनमें द्वेष न करना ही

श्रोत्रेन्द्रिय विजय  
कहलाता है।

मुनियों के छह आवश्यक और  
शेष सात मूलगुण

समता सम्हारै, थुति उचारै, वन्दना जिनदेव को ।  
नित करै श्रुति-रति, करै प्रतिक्रम, तजै तन अहमेव को ॥  
जिनके न न्हौन, न दंतधोवन, लेश अम्बर आवरन ।  
भूमाहिं पिछली रयनि में कछु शयन एकासन करन ॥5॥

- ❁ समता= सामायिक
- ❁ सम्हारै=समहालकर
- ❁ थुति= स्तुति
- ❁ उचारै= बोलते हैं
- ❁ श्रुतिरति= स्वाध्याय में प्रेम
- ❁ प्रतिक्रम= प्रतिक्रमण
- ❁ अहमेव को= ममता को
- ❁ तजै= छोड़ते हैं
- ❁ न्हौन= स्नान और
- ❁ दंतधोवन= दाँतों को स्वच्छ करना
- ❁ अंबर आवरन= शरीर ढँकने के लिए वस्त्र
- ❁ लेश= किंचित् भी
- ❁ भूमाहिं= धरती पर
- ❁ पिछली रयनि में= रात्रि के पिछले भाग में
- ❁ कछु= कुछ समय तक
- ❁ एकासन= एक करवट

समता सम्हारै, थुति उचारै, वन्दना जिनदेव को ।  
नित करै श्रुति-रति, करै प्रतिक्रम, तजै तन अहमेव को ॥  
जिनके न न्हौन, न दंतधोवन, लेश अम्बर आवरन ।  
भूमाहिं पिछली रयनि में कछु शयन एकासन करन ॥5॥

❖ वीतरागी मुनि सदा

❖ सामायिक, सच्चे देव-गुरु-शास्त्र की स्तुति, जिनेन्द्र भगवान की वन्दना, स्वाध्याय, प्रतिक्रमण, कायोत्सर्ग करते हैं;

❖ इसलिये उनको छह आवश्यक होते हैं

❖ वे मुनि कभी भी

❖ स्नान नहीं करते,

❖ दाँतों की सफाई नहीं करते,

❖ शरीर को ढँकने के लिए थोड़ा-सा भी वस्त्र नहीं रखते तथा

❖ रात्रि के पिछले भाग में एक करवट से भूमि पर कुछ समय शयन करते हैं

# आवश्यक किसे कहते हैं?

- ❖ जो कषाय राग-द्वेष आदि के वशीभूत न हो वह अवश है।
- ❖ उस अवश का जो आचरण वह आवश्यक है।
- ❖ जो इंद्रियों के वश्य (आधीन) नहीं होता उसको अवश्य कहते हैं।
- ❖ ऐसे संयमी के करने योग्य कर्मों का नाम ही आवश्यक है।



# 6 आवश्यक

सामायिक

स्तुति

वन्दना

प्रतिक्रमण

प्रत्याख्यान

कायोत्सर्ग

# सामायिक

## नाम

- शुभ अथवा अशुभ नाम में राग-द्वेष नहीं करके समभाव रखना

## स्थापना

- यथोक्त मान व उन्मान आदि गुण युक्त शुभ व अशुभ स्थापना में रागद्वेष रहित होना

## द्रव्य

- सोना, चाँदी, मोती, माणिक, मिट्टी, काठ, कांटे, पत्थर आदि में समदृष्टि रखना

# क्षेत्र

- बगीचा, महल, श्मशान, कण्टकाकीर्ण जंगल इत्यादि शुभ तथा अशुभ क्षेत्रों में राग-द्वेष छोड़ना

# काल

- शरद, बसन्त, ग्रीष्म इत्यादि ऋतुओं में, दिन-रात में तथा कृष्ण शुक्लपक्ष में यथायोग्य राग-द्वेष रूप परिणति से विरक्त होना

# भाव

- सम्पूर्ण जीवों में मैत्री भाव रखना, शुभाशुभ इष्ट-अनिष्ट पदार्थों में राग-द्वेष को छोड़ना

# स्तवन

लोक में धर्म का उद्योत करनेवाले केवली  
जिन और वृषभादि चौबीस तीर्थंकरों के  
गुणों का कीर्तन करना सो चतुर्विंशति  
स्तवन है ।

# चतुर्विंशति स्तवन

नाम

स्थापना

द्रव्य

क्षेत्र

काल

भाव

# क्यों करना चाहिये?

अर्हंत जिनेन्द्र देव के प्रसाद से मुझे  
बोधि (सम्यक्त्व सहित ज्ञान) की प्राप्ति  
हो ऐसी भावना से

# वंदना

२४ तीर्थंकरों में से किसी एक को नमस्कार करना,

स्तुति करना,

भक्ति सहित पूजा करना,

जय-जयकार करना

आदि विनयक्रिया-वन्दना कहलाती है।

# वंदना

नाम

- चतुर्विंशति तीर्थकरों में से किसी एक का नामोच्चारण करना

स्थापना

- चौबीस तीर्थकरों में से किसी एक तीर्थकर की प्रतिमा की स्तुति-पूजा करना

द्रव्य

- चौबीस तीर्थकरों में से किसी एक के अंगों की स्तुति करना

क्षेत्र

- तीर्थकरों के कल्याणकों की भूमि का स्तवन करना

काल

- तीर्थकरों के प्रत्येक कल्याणक के समय की या वर्तमान तिथियों में उस समय का आरोप करके भक्ति स्तुति करना

भाव

- चौबीस तीर्थकरों के गुणों का शुद्ध मन, वचन, काय से स्तवन करना



# प्रतिक्रमण

प्रमाद-जन्य दोषों (अतिचारों) से अपनी आत्मा को पृथक् कर गुणों में स्थापित करना प्रतिक्रमण है।

अथवा किये हुये दोषों का शोधन करना प्रतिक्रमण है।

# प्रतिक्रमण

नाम

- पाप के कारण भूत अतिचारों से शाब्दिक निवृत्ति होना, अथवा प्रतिक्रमण पाठ का उच्चारण करना

स्थापना

- सराग स्थापनाओं से परिणामों का निवृत्त करना अथवा अतिक्रम करनेवाले की मूर्ति स्थापित करना

द्रव्य

- सावद्य द्रव्यों के सेवन करने से परिणामों को हटाना द्रव्य प्रतिक्रमण है।

# क्षेत्र

- क्षेत्र का आश्रय से उत्पन्न हुए अतिचारों से निवृत्त होना क्षेत्र प्रतिक्रमण

# काल

- काल के आश्रय से लगे दोषों से निवृत्त होना काल प्रतिक्रमण है।

# भाव

- राग, द्वेष, क्रोधादि से लगे अतिचारों से निवृत्त होना भाव प्रतिक्रमण है।

# प्रत्याख्यान

मन, वचन, काय और

कृत, कारित, अनुमोदना से,

वर्तमान कालिक तथा

भविष्यतकालिक,

नाम स्थापनादि छह प्रकार के भेद रूप

दोषों का त्याग करना सो प्रत्याख्यान है

# प्रत्याख्यान

## नाम

- अयोग्य नाम का उच्चारण नहीं करूंगा

## स्थापना

- आत्माभासों की प्रतिमा को नहीं पूजूंगा, 3 योगों से त्रस और स्थावर जीवों को पीड़ा नहीं पहुँचाऊंगा

## द्रव्य

- अयोग्य आहार, उपकरणों को ग्रहण नहीं करूंगा

# क्षेत्र

- संयम को हानि पहुँचाने वाले, संक्लेश उत्पन्न करने वाले क्षेत्र को छोड़ूंगा

# काल

- काल अनुपयुक्त गमन-आगमनादि नहीं करूंगा

# भाव

- अशुभ परिणाम नहीं करूंगा

# कायोत्सर्ग

- काय + उत्सर्ग

## काय =

- पदार्थों को जानने का आधार इन्द्रियां जिसका अवयव है और कर्म के द्वारा जिसकी रचना हुई है ऐसा औदारिक शरीर

## उत्सर्ग =

- त्याग

जिनेन्द्र भगवान के गुण चिन्तन सहित

यथोक्त काल में

यथोक्त परिमाण से

# कायोत्सर्ग

दैवसिकादि नियमों के पालन करने में

शरीर से ममत्व बुद्धि का त्याग करना कायोत्सर्ग है ।

इसी का दूसरा नाम व्युत्सर्ग भी है।



# कायोत्सर्ग करनेवाले में निम्नलिखित गुण होने चाहिये

मोक्ष का इच्छुक,

निद्रा का जीतने वाला,

शास्त्र के अर्थ का ज्ञाता,

स्वाभाविक तथा आहारादि जन्य शक्ति सम्पन्न,

स्थित रहनेवाला,

अंगुल अन्तर से पाँवों को रखके खड़ा हुआ योगी

❁मुनि ऐसा निश्चय करके कायोत्सर्ग  
करते हैं कि मनुष्य, देव, तिर्यंच एवं  
अचेतन द्वारा जो उपसर्ग होंगे, उन  
सबको कायोत्सर्ग में स्थित हुआ मैं  
अच्छी तरह सहन करूँगा

# कायोत्सर्ग का प्रमाण

कायोत्सर्ग की उत्कृष्ट स्थिति १ वर्ष

तथा जघन्य स्थिति अन्तर्मुहूर्त प्रमाण है।

# आसन की अपेक्षा कायोत्सर्ग के भेद

## १. उत्थितोत्थित

- कायोत्सर्ग करके खड़ा हुआ मुनि जब धर्म और शुक्ल दोनों ध्यानों को ध्याता है तथा शरीर और परिणामों से खड़ा रहता है

## २. उत्थितनिविष्ट

- जब कायोत्सर्ग में खड़ा हुआ मुनि आर्त तथा रौद्र ध्यानमय चिन्तना करने लगता है

## ३. उपविष्टोत्थित

- जब बैठा हुआ मुनि धर्म्यध्यान और शुक्लध्यान को ध्याता है

## ४. उपविष्टनिविष्ट

- जब पल्यंकासन से बैठा हुआ मुनि आर्त-रौद्र ध्यान को ध्याता है

# 7 अन्य गुण

अस्नान

अदन्तधोवन

भूमि पर शयन  
करना

दिन में एक बार  
आहार लेना

खड़े-खड़े अपने हाथ  
में आहार लेना

नग्न रहना

केशलॉच

अस्नान

मुनि जल  
आदि किसी  
भी वस्तु से  
स्नान नहीं  
करते।

# मुनि स्नान क्यों नहीं करते?

आरंभजनित पाप होता है,

स्नान से शरीर में राग एवं ममत्व उत्पन्न होता है।

स्नान शरीर का श्रृंगार है।

इससे शरीर निखर जाता है और अवश्य ही कुछ आकर्षकता आ जाती है, जो स्व-पर कल्याण में बाधक है

# स्नान-त्याग से लाभ

स्नान-त्याग से सारा शरीर पसीना आदि मलों से भर जाता है। जिससे शरीर की मोहकता नष्ट हो जाती है और दोनों प्रकार के संयम पल जाते हैं।

शरीर के प्रति विरागता उत्पन्न होने से इन्द्रिय संयम पलता है

स्नान में होनेवाले आरंभ से बचाव होने के कारण प्राणिसंयम भी पलता है।



स्नान किये बिना, मुनि अशुद्धतापूर्वक गृहस्थ के चौके में कैसे जा सकते हैं?

❁ व्रत और महामन्त्र रूप स्नान से मुनि सर्वदा पवित्र रहते हैं, तब उनमें शुद्धि या पवित्रता की न्यूनता कैसी? जिससे वे गृहस्थी के चौके में न जा सकें।

# अदन्तधावन

अंगुली, नख, दतौन, सींक, पत्थर, पेड़ की छाल, खर्पर खण्ड, तन्दुलवर्तिका आदि से

जो संयम की रक्षा के लिए दन्तमल का शोधन नहीं किया जाता,

उसे अदन्तधावन व्रत कहते हैं।

# विशेष

वास्तविक दृष्टि से तो मुख सदैव अशुद्ध ही रहता है।

धोने पर भी उसमें शुद्धता नहीं आती। वह तो हमेशा कफ, थूक आदि का धाम बना ही रहता है।

इसलिए व्यर्थ ही मुख-शुद्धि के नाम पर इन्द्रिय-विजयी संयमी क्यों सम्मूर्च्छन आदि जीवों के घात का भागी बनें!

यदि मुनि भी श्रावकों की तरह मुखशुद्धि एवं दाँतों को उजला करने लगे, तो इससे उसका शरीर के प्रति अनुराग प्रकट होगा ।

# दन्तधोवन से

मूलगुणों का  
पालन

वैराग्य की वृद्धि

इन्द्रिय संयम  
का रक्षण

सर्वज्ञ की आज्ञा  
का पालन

नहीं  
होता है

# नग्न रहना

दिगम्बर मुनि जन्मते  
बालक की भाँति यथाजात  
रूप अर्थात् नग्न होते हैं।

मुनिराज  
अपने शरीर  
को इनमें से  
किसी से भी  
आवरित नहीं  
करते

**वस्त्र:**

- धोती, दुपट्टा, कुर्ता  
आदि

**चर्म:**

- हिरण, बाघादि के चर्म  
से बने वस्त्र

**वक़ल:**

- वृक्ष की छाल आदि

यदि ऐसी बात है तब तो मुनि को पिच्छी, कमण्डलु  
और पुस्तकें भी नहीं रखना चाहिए

पूर्ण रूप से दया का पालन करने के लिए पिच्छिका की नितान्त  
आवश्यकता है

कमण्डलु तो शौच का उपकरण है।

पुस्तकें ज्ञान का उपकरण है।

शरीर को छोड़ना तो बिलकुल अशक्य है।

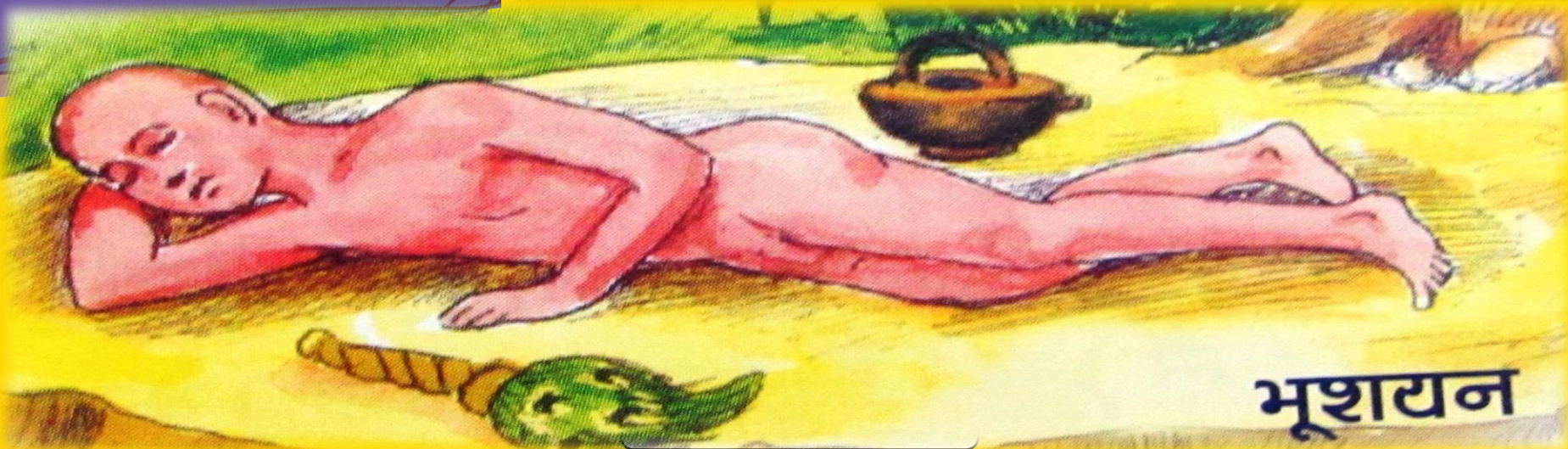


# भूमि पर शयन करना

प्रासुक (जीव-जन्तु-रहित) भूमि, शिला, काष्ठ, पट्टा,  
तृण वगैरह पर मुनि शयन करें।

वह सोने का आसन न तो बहुत ऊँचा हो और न  
बहुत नीचा हो।

वहाँ पर स्त्री, पुरुष, नपुंसक तथा पशु आदि का भी  
विशेष गमनागमन न हो, एकान्त स्थान हो।



भूशयन

# भूशयन मूलगुण पालन से क्या लाभ हैं?

इन्द्रिय सुख का त्याग होता है

प्रमाद की निवृत्ति होती है

ब्रह्मचर्य की रक्षा होती है

तप में दृढ़ता आती है

शरीर में निस्पृहता आती है

➤ Reference : तत्त्वार्थसूत्र, रत्नकरंड-श्रावकाचार

Presentation developed by  
Smt. Sarika Vikas Chhabra

➤ For updates / feedback / suggestions, please  
contact

➤ Sarika Jain, [sarikam.j@gmail.com](mailto:sarikam.j@gmail.com)

➤ [www.jainkosh.org](http://www.jainkosh.org)

➤ ☎: 94066-82889